B.A. Honours Part - I

प्राचीन भारत का इतिहास, Paper, I

**Q. चन्द्रगुप्त द्वितीय के जीवन-चरित्र एवं उपलब्धियों का वर्णन करें।**

Ans. → **प्रारम्भिक जीवन** → चन्द्रगुप्त द्वितीय समुद्रगुप्त का पुत्र था। उसकी माता का नाम दत्तदेवी था। वह बड़ा ही पराक्रमी तथा शूरवीर और गंभीर व्यक्ति था। उसका बड़ा भाई रामगुप्त कायर था। इसलिए चन्द्रगुप्त द्वितीय ने रामगुप्त को कत्ल कर उसकी पत्नी ध्रुव देवी से विवाह कर मगध की गद्दी पर बैठा। यही चन्द्रगुप्त द्वितीय भारतीय इतिहास में चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के नाम से प्रसिद्ध है। विक्रमादित्य उसकी उपाधि थी। विक्रमादित्य उस व्यक्ति को कहा जाता है जो सूर्य के समान प्रतापी एवं तेजस्वी हो। चन्द्रगुप्त की यह उपाधि ठीक थी क्योंकि उसने अपने ऐश्वर्य, गौरव और प्रताप को उसी प्रकार फैलाना शुरू किया था जिस प्रकार सूर्य अपने प्रकाश को सारे संसार में फैलाता है। उसने अपना प्रताप भी इसी भाँति फैलाया था। उसने 375 ई० से 413 ई० तक मगध पर राज्य किया।

**वैवाहिक सम्बंध** → चन्द्रगुप्त द्वितीय एक उच्च कोटि का नीतिज्ञ था। उसने वैवाहिक संबंध द्वारा अपनी शक्ति एवं स्थिति को सुदृढ़ बनाने की कोशिश की। उसने नागवंश की अति सुन्दरी राजकुमारी कुबेरनाग के साथ अपना विवाह किया, जिससे प्रभावती नामक एक कन्या उत्पन्न हुई थी। उसने अपनी इस पुत्री की शादी वाकाटक राजा रूद्रसेन द्वितीय से की थी। उसने अपनी विधवा भाभी ध्रुवदेवी से भी विवाह कर लिया था जिससे उसको कुमारगुप्त और गोविन्दगुप्त नामक दो पुत्र हुए थे। उसने अपने पुत्र का विवाह कुन्तल के राजा काकुत्स्थ वर्मन की कन्या के साथ किया। डॉ० स्मिथ ने उसके इन

वैवाहिक संबंधों को बड़ा महत्व दिया है क्योंकि इन वैवाहिक संबंधो से उसको अपने साम्राज्य के विस्तार करने तथा दुश्मनों को दमन करने में बड़ी सहायता मिली थी।

चन्द्रगुप्त की कठिनाईयाँ → चन्द्रगुप्त द्वितीय के गद्दी पर बैठने के साथ ही, चारो तरफ कठिनाईयों आकर घेर लिया। रामगुप्त के शासनकाल में गुप्त साम्राज्य के शासन-तंत्र में शिथिलता आ गई थी। शकों की विजय ने गुप्त साम्राज्य की मान-मर्यादा को नष्ट कर दिया। इतना ही नहीं रामगुप्त के दुर्बल शासन से नाजायज फायदा उठाकर प्रान्तीय शासक स्वतंत्र हो चले थे। मौका देखकर विदेशी मगध पर आक्रमण करने के लिए आतुर थे। इन सारी कठिनाईयों से चन्द्रगुप्त द्वितीय जरा भी नहीं घबड़ाया बल्कि उसने बड़ी ही दृढ़ता के साथ इन कठिनाईयों का सामना किया और एक-एक कर सबों पर विजय प्राप्त की।

उसकी विजय → चन्द्रगुप्त द्वितीय को अपने पिता से विरासत में एक बहुत बड़ा साम्राज्य मिला था। जिसको संजोकर रखना उसका फर्ज था। अतः साम्राज्य की स्थापना के लिए उसे कुछ भी नहीं करना पड़ा था। उसने उसकी सुरक्षा और उसका विस्तार करना शुरू किया। साम्राज्य की सुरक्षा तथा उसका विस्तार युद्धों के बिना असंभव था। फलतः उसे निम्न युद्ध करना पड़ा -

1. गणराज्यों का विनाश → गुप्त साम्राज्य के उत्तर तथा पश्चिम में अनेक छोटे-छोटे तथा निर्बल गणराज्य थे। चन्द्रगुप्त ने एक-एक कर इन सभी गणराज्यों को हस्तगत कर लिया था परन्तु इनको अपने साम्राज्य में नहीं मिलाया। चन्द्रगुप्त की यह एक बड़ी भूल थी लेकिन

प्राचीन भारत का इतिहास

उसने अपनी इस भूल को शीघ्र ही सुधार किया। उसने इन गणराज्यों को यों ही छोड़ देना उचित नहीं समझा क्योंकि इनमें बाहरी चढ़ाई रोकने की क्षमता भी नहीं। इसीलिए उसने उनको अपने साम्राज्य में मिला लेना ही उचित समझा। इसी भावना से प्रेरित होकर उसने इन गणराज्यों पर आक्रमण कर उन्हें अपने साम्राज्य में मिला लिया।

(2) अवन्ति की विजय → गणराज्यों को अधिकृत कर लेने के बाद चन्द्रगुप्त द्वितीय अवन्ति पर चढ़ाई की। उस समय अवन्ति पर शकों का राज्य था। लेकिन अवन्ति चन्द्रगुप्त द्वितीय का मुकाबला नहीं कर सका। चन्द्रगुप्त द्वितीय ने सुनहला मौका देखकर अवन्ति कर लेने के बाद उसके आस-पास के सभी प्रदेशों मालवा, गुजरात और काठियावाड़ आदि प्रदेशों पर भी अपनी विजय पताका फहरा दिया। चन्द्रगुप्त के ऐसा करने से इस क्षेत्र से शकों का अधिकार तथा प्रभाव समाप्त हो गया। अब इस क्षेत्र में चन्द्रगुप्त द्वितीय की विजय पताका अबाध गति से लहराने लगी।

(3) पूरब के राज्यों पर अधिकार → शकों की शक्ति को चकनाचूर करने के बाद चन्द्रगुप्त द्वितीय पूरब की ओर बढ़ा। क्योंकि पूरब में उसके कई शत्रु इन्तजार कर रहे थे। जैसा कि महरौली के लौह स्तम्भ में पता चलता है कि जब चन्द्रगुप्त द्वितीय पूरब की ओर अभियान कर रहा था उस समय उसके दुश्मन भूपति समतट दावक और कामरूप के राजा गुप्त साम्राज्य को ही समाप्त कर देने के उद्देश्य से बहुत विशाल सेनाओं के साथ बंगाल में एकत्रित हो गये थे। वास्तव में यह संघ चन्द्रगुप्त की कमर तोड़ने वाली थी। जब इस संघ का पता

B.A. Part - I, Paper - I

उसे चला तो वह भी एक बहुत बड़ी सेना लेकर इस संघ को तोड़ने चल पड़ा। उसने बात की बात में इस संघ को तोड़-फोड़ कर बंगाल पर अधिकार जमा लिया। उसकी इस विजय से उसकी प्रतिष्ठा में चार चाँद लगा दिए। इससे उसके साम्राज्य की सीमा आसाम प्रदेश तक फैल गयी। पूरब के राज्यों पर अधिकार के बाद इसने पश्चिम के प्रदेशों पर विजय प्राप्त किया। इसी विजय के स्मरण में विक्रमादित्य की उपाधि धारण की। उसके बाद उसने दक्षिण के राज्यों

12 पर अधिकार, सत्ता स्थापित की। इस प्रकार चन्द्रगुप्त द्वितीय का राज्य विस्तार काफी

1 बढ़ गया था।

चन्द्रगुप्त द्वितीय का चरित्र → चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य

2 की गिनती भारत के योग्य सम्राटों में की जाती है। वह एक सफल तथा महान विजेता था।

3 वह साहसी व्यक्ति था। वह कठिन परिस्थितियों में भी अपने धैर्य को नहीं खोता था। उसने

4 अपने बाहुबल से गुप्त साम्राज्य का विस्तार कर उसकी अनन्त सेवा की जिसके फलस्वरूप

5 गुप्त साम्राज्य की नींव कभी कमजोर नहीं हुई। वह एक बेजोड़ सेनानायक था। वह अपने

6 देश में विद्रोहियों को देखना नहीं चाहता था। इसलिए उसने उनको यहाँ से खदेड़ दिया था। कूटनीतिज्ञता के क्षेत्र में भी वह अद्वितीय था। वह अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए सुकर्म और कुकर्म कुछ भी भेद नहीं समझता था।

उपरोक्त विशेषताओं के आधार पर यह कहा जाता है कि चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य कुशल तथा ख्याति प्राप्त सम्राट था।

Dr. Digambar Jha, Dept of History
S.R.A.P. College Bara Chakiya